गान्धार कला में बुद्ध जीवन

डा. नीरज कुमार पाण्डेय

मानव सदा से कथा प्रिय रहा है। जब उपदेश, कथाओं और दृष्टान्तों के साथ चित्रित कर दिये जाते हैं तो वे मन पर और भी गहरा प्रभाव डालने में समर्थ हो जाते हैं। भारत की कला धर्म से अनुप्राणित रही है। आध्यात्मिकता ही उसकी आत्मा है। भारतीय कला में बौद्ध कला का महत्त्वपूर्ण स्थान है और भगवान् बुद्ध भारतीय कला के प्राण कहे जाते हैं।

प्रारम्भिक बौद्ध शिल्प भरहुत, सांची, अमरावती आदि स्तूपों की वेदिकाओं और तोरणों पर बुद्ध की प्रतिमा नहीं आंकी गई अपितु उनके स्थान पर उनके प्रतीकों यथा–स्तूप, वृक्ष, चरण चिह्न आदि को प्रतिष्ठा दे दी गई। सम्भवतः मथुरा शैली में सर्वप्रथम बुद्ध प्रतिमा बनी। मथुरा के शिल्पी जिन दिनों भगवान् तथागत की शान्ति, मैत्री और करुणा को भावमयी प्रतिमाओं के रूप में साकार कर रहे थे, उन दिनों भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में भी बुद्ध की जीवन गाथा और जातक कथाओं से प्रेरणा पाकर राजा लोग शिल्पियों से बुद्ध की असंख्य प्रतिमायें बनवा रहे थे। गान्धार प्रदेश में यवन, ईरानी और भारतीय संस्कृतियों का संगम हो रहा था और इसका प्रभाव कला पर भी पड़ना स्वाभाविक था।

गान्धार नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है और साथ ही प्राचीन भी। गान्धार नाम का सर्वप्रथम उल्लेख *ऋग्वेद* और *अथर्ववेद* में आता है। वहां 'गान्धारि' का अर्थ है गान्धार के निवासी और विशेषतः गान्धार के मोटे ऊन वाली भेंड़ का उल्लेख किया गया है। ऐतरेय और *शतप्रथ ब्राह्मणों* में 'गान्धार' नाम आया है जो शिल्पाचार्यों की सूची में गान्धार के शिल्पाचार्य नग्नजित् का नाम है। *छान्दोग्य उपनिषद्* में गान्धार देश को पश्चिम में बताया गया है और कहा गया है कि एक जाना पहचाना मार्ग गान्धार को मध्य देश से मिलाता है। पाणिनि ने गान्धारि रूप दिया है (4.1.169)। यह एक महाजनपद था। जिसके बीच में से बहता हुआ सिन्धु नद उसे दो भागों में बाँटता था–एक था पूर्व गान्धार जिसकी राजधानी तक्षशिला थी और दूसरा अपर गान्धार जिसकी राजधानी पुष्कलावती थी। ग्रन्थों में गान्धार को उद्यान भी कहा गया है, पर वस्तुतः इसका नाम उड्डियान या स्वात देश था। इस प्रकार स्वात, काबुल और सिन्धु इन तीन नदियों से घिरा हुआ प्रदेश गान्धार था। इस महाजनपद का महत्त्व बड़े मार्ग के कारण था जो तक्षशिला, शाकल, मथुरा, कौशाम्बी और प्रयाग को आपस में मिलाता था। यह मार्ग सारे एशिया के व्यापार की रीढ़ थी। व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यहाँ कला का विकास भी व्यापक रूप से हुआ।

गान्धार में बौद्ध धर्म का प्रसार तो सम्राट् अशोक के समय ही हो गया था किन्तु कनिष्क के समय बौद्ध धर्म अपने चरम पर था। कनिष्क सभी धर्मों को सम्मान की दृष्टि से देखते थे। उनके समय में इस क्षेत्र में महायान बौद्ध धर्म की जड़ें जमती गई और महायान यहाँ कई शताब्दियों तक फलता फूलता रहा। चीनी पर्यटक ह्वेन सांग जो सातवीं शताब्दी में भारत आया, ने लिखा है कि गान्धार में पांच सौ विहार हैं जिनमें भिक्षुगण निवास करते हैं। गान्धार शैली महायान के मूर्ति विधान की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विषयों की बाहुल्यता इसकी विशेषता है। गान्धार कला के सात प्रमुख केन्द्र थे–तक्षशिला, पुष्कलावती, नगरहार, स्वात घाटी, कपिशा, बामियान और बैक्ट्रिया।

गान्धार प्रदेश में पिछली शताब्दी में अनेक स्थानों की खुदाई की गई। इन उत्खननों के परिणामस्वरूप

प्रतिमाओं का इतना विशाल भण्डार निकला कि पेशावर, लाहौर और कलकत्ता के संग्रहालयों के अनेक कक्ष भर गये। सबसे पहली खुदाई सर क्लाइब बैले ने जमालगढ़ी में कराई और उत्खनन से प्राप्त मूर्तियों को इंगलैन्ड ले जाया गया। वहाँ इन मूर्तियों की प्रदर्शनी लगाई गई किन्तु दुर्भाग्यवश उसमें आग लग गई और सारी प्रतिमायें नष्ट हो गई। गान्धार कला की प्रतिमायें काले स्लेटी पत्थर की हैं। भारतीय कला के इतिहास में गान्धार कला के तिथिक्रम, विषय और शैली का बहुत महत्त्व है। इस कला की केवल आठ मूर्तियों पर वर्ष दिया हुआ है पर उनका संवत्सर अनिश्चित है। इन संवत्सरों से यह प्रतीत होता है कि पहली से तीसरी शती में बनाई गई। यह बात सही है कि मथुरा के शिल्पियों ने सैकड़ों लेख मूर्तियों की चौकियों पर उत्कीर्ण किये पर गान्धार के शिल्पी जिनसे ऐतिहासिक भावना की अधिक अपेक्षा की गई है, इस विषय पर प्रायः उदासीन रहे। यह सब होते हुए भी गान्धार कला की अवधि अनुमानतः प्रमाणित है अर्थात् अधिकांश पाषाण शिल्प पहली से तीसरी शती तक के और गचकारी का काम चौथी से छठीं शती में हुआ।

प्रतिमा शास्त्र की दृष्टि से गान्धार कला की निम्नलिखित विशेषतायें हैं–

बुद्ध के जीवन की घटनाएँ, बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियाँ, जातक कथायें, यूनानी देवी देवता और उनकी गाथाओं के दृश्य, भारतीय अभिप्राय एवं अलंकरण। गान्धार कला के अधिकांश विषय बुद्ध के जीवन से लिये गये हैं। शायद ही कोई ऐसा प्रसंग शेष बचा हो जिसे यहां के शिल्पी की छैनी ने न छुआ हो। उनके भू पर अवतरित होने से लेकर महापरिनिर्वाण तक के सारे प्रसंग इस शिल्प में उकेर दिये गये हैं। गान्धार शैली की ये मूर्तियां मानो बुद्ध की जीवन गाथाओं की विशाल भण्डार हैं। इनकी शैली भारतीय कला के कई केन्द्रों में उकेरे गये दृश्यों से अधिक सजीव है। इन बहुमुखी दृश्यों की विविधता निम्नलिखित सूची से प्रकट होती है–

- माया देवी का स्वप्न
- ज्योतिषियों द्वारा मायादेवी के स्वप्न का फलकथन
- मायादेवी का कपिलवस्तु से लुम्बिनी उद्यान में जाना
- लुम्बिनी उद्यान में बुद्ध का जन्म
- छन्दक सारथि और कन्थक अश्व का जन्म
- जन्म के बाद बुद्ध द्वारा सात पग चलना
- बुद्ध का प्रथम स्नान
- असित द्वारा कुण्डली का फल कथन
- सिद्धार्थ का बोधिसत्त्व रूप
- सिद्धार्थ की पाठशाला में शिक्षा
- लिपिविज्ञान में सिद्धार्थ की परीक्षा
- सिद्धार्थ की मल्ल और बाण विद्या में परीक्षा
- सिद्धार्थ और यशोधरा का विवाह
- राजप्रासाद में बुद्ध के जीवन दृश्य
- बुद्ध का गृहत्याग

- कन्थक अश्व की विदाई
- उष्णीष और आभूषण ग्रहण करता हुआ छन्दक सारथि
- बिम्बसार का बुद्ध दर्शन के लिए आना
- उद्रक रामपुत्र और आलार कलाम से मिलना
- श्रोत्रिय ब्राह्मण द्वारा आठ मुष्टि कुश प्रदान करना
- प्रथम तपश्चर्या
- उपवास करते हुए बोधिसत्त्व
- मार द्वारा प्रलोभन एवं मार विजय
- संबोधि की प्राप्ति
- त्रपुष और भल्लिक द्वारा बुद्ध को भिक्षा पात्र एवं भोजन प्रदान करना
- लोकपालों द्वारा भिक्षा पात्र प्रदान करना
- देवताओं द्वारा बुद्ध से धर्मोपदेश के लिए प्रार्थना करना
- बुद्ध द्वारा सारनाथ में धर्मचक्रप्रवर्तन
- बुद्ध द्वारा उरुवेला में काश्यप के समक्ष चमत्कार
- उरुवेला की अग्निशाला में कृष्णसर्प पर विजय
- बुद्ध का कपिलवस्तु में आगमन और राहुल को भिक्षु की दीक्षा देना
- बुद्ध पर देवदत्त द्वारा कराये गये घातक प्रहार
- श्रावस्ती में अनाथपिण्डक द्वारा बुद्ध को जेतवन का दान
- वानरों द्वारा मधु प्रदान
- श्रावस्ती का चमत्कार
- अंगुलिमाल का स्वभाव परिवर्तन
- आम्रपाली द्वारा बुद्ध को आम्रवन का दान
- कुशीनगर में महापरिनिर्वाण
- बुद्ध के मृत शरीर की शविका
- बुद्ध के शव का अग्निकर्म
- बुद्ध के धातुओं का बंटवारा
- धातु पूजा, स्तूप पूजा

ऊपर दी गई सूची के अतिरिक्त बुद्ध जीवन से सम्बन्धित और भी दृश्य हमें गान्धार कला में मिलते हैं। इससे यह पता चलता है कि गान्धार के शिल्पी इस दिशा में सबको पीछे छोड़ गये हैं। उनकी बुद्ध जीवन की छोटी बड़ी सभी घटनाओं में रुचि थी और वे मानवी गौतम के इहलौकिक स्वरूप में रुचि प्रदर्शित कर रहे थे साथ ही बुद्ध के लोकोत्तर जीवन की ओर से भी वे निरपेक्ष नहीं थे। यदि इन घटनओं के साथ जातक कथाओं को भी मिला दिया जाय तो गान्धार कला का महान् चित्र सामने आता है।

बुद्ध की जीवन लीला और जातक कथाओं का अंकन मध्यदेश की कला से ग्रहण करने के साथ-साथ गान्धार के शिल्पियों ने ईरानी, यूनानी, रोमन आदि कला के अनेक प्रभाव और अलंकरण स्वीकार किये। संभवत: गान्धार कला में भारत, ईरान एवं यूनान व रोम की कलाओं के प्रभावों का सम्मिलन हुआ। गान्धार के शिल्पियों ने मध्यदेश विशेष रूप से मथुरा की कला से कुछ अभिप्राय लेने का प्रयत्न किया जैसे शालभञ्जिका मूर्तियां पर वे इसमें सफल नहीं हो सके। उन्होंने यूनानी अभिप्राय और विषयों के अंकन बहुत ही सफलतापूर्वक किया है। बुद्ध के जीवन प्रसंगों का अंकन बड़े ही उत्साह से सजीव शैली में किया गया है और यह उस प्रदेश में बौद्ध धर्म के उत्कट भावना के अनुरूप है किन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि बुद्ध और बोधिसत्त्व के मुख अध्यात्म भावना से शून्य हैं और उसमें तथागत की उस छवि का अभाव है जो मथुरा और सारनाथ की अंतर्मुखी मूर्तियों में पाई जाती है। गान्धार कला के रचनात्मक महत्त्व, भौतिकता और उत्पादन शक्ति को किसी प्रकार कम नहीं आंका जा सकता। उसने ऐसी क्षमता दिखाई कि भारतीय, रोमन, यूनानी, ईरानी, मध्य एशियाई एवं चीनी प्रभावों के लिए अपना द्वार खोल दिया और कला के सौन्दर्य की रक्षा करते हुए जितना जहां से लिया जा सका उसे लिया। यह कला बहुमुखी थी। धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता में इसका जन्म और विकास हुआ। भारतीय, यूनानी और ईरानी प्रभावों के आदान-प्रदान से गान्धार कला भरी हुई है। यहां के स्तूपों और विहारों से जो सहस्त्रों मूर्तियां पाई गई हैं, वे कुषाण काल में सलेटी पत्थर की हैं और गुप्तकाल में गचकारी और चूने की है।

भगवान् गौतम बुद्ध की प्रतिमायें अनेक शिल्प शैलियों में आंकी गई किन्तु जिस वस्तु को देखकर हम उन्हें तुरन्त पहचान लेते हैं वही कला की आत्मा है। कमल किसी भी सरोवर में खिले सुरभि तो वही रहती है। बुद्ध भारत की कला के सहस्त्रदल पद्म हैं। उन्हें जाने बिना इस देश की कला को भी नहीं जाना जा सकता।

संदर्भ

1. अग्रवाल वासुदेव शरण, *भारतीय कला,* पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, 2000
2. चन्द्र जगदीश, *कला के प्राण बुद्ध,* मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, नागपुर, 1956
3. Bhattacharya D.C., *Gandhāra Sculpture in the Government Museum and Art Gallery, Chandigarh,* Government Museum and Art Gallery, Chandigarh, 2000
4. Sharma R.C. & Ghosal Pranati, *Buddhism and Gandhāra Art,* Aryan Books International, New Delhi, 2004
5. Lyons Islay & Ingholt Harald, *Gandharan Art in Pakistan,* Pantheon Books, New York, 1957
6. Asthana Shashi & Jha Bhogendra, *Gandhara Sculpture,* Bharat Kala Bhavan, 1999

मायादेवी का स्वप्न

असित द्वारा बालक सिद्धार्थ का भविष्य निर्णय

बालक सिद्धार्थ का विद्यालय को प्रस्थान

सिद्धार्थ का गृह त्याग

मार-विजय

धर्म-चक्र प्रवर्तन

बानरों द्वारा मधु-दान

महापरिनिर्वाण